YUVA EXPLORERS

ISSUE 3 | AUGUST 2026

HINDI

स्वतंत्रता विशेषांक

कई वर्षों तक भारत का इतिहास पश्चिमी और औपनिवेशिक दृष्टिकोण से लिखा गया। इस कारण अनेक ऐतिहासिक घटनाओं को उसी नज़रिए से समझाया गया और समय के साथ उसी सोच का प्रभाव हमारे अपने इतिहास को देखने और समझने के तरीके पर भी पड़ा। परिणामस्वरूप हमारे इतिहास की अनेक प्रेरणादायक कहानियाँ अधूरी रह गईं। आज हमें यह अवसर मिला है कि हम अपने इतिहास को अपनी दृष्टि और अपने शब्दों में समझें, जानें और साझा करें।

हम फाउंडेशन फॉर इंडियन हिस्टोरिकल एंड कल्चरल रिसर्च (FIHCR) की टीम हैं। हम अपने देश के शानदार इतिहास, दिलचस्प परंपराओं और बेहतरीन नेताओं को खोजने और उन्हें सराहने में मदद करते हैं।

क्या आप हमारे युवा कार्यक्रम के बारे में जानते हैं? यदि आपकी आयु 6 से 18 वर्ष के बीच है, तो युवा, विशेष रूप से आपके लिए बनाया गया है। हमारा उद्देश्य इतिहास को आपके लिए रोचक बनाना है। हर तीन महीने में प्रकाशित होने वाली इस ई-पत्रिका के माध्यम से हम आपको इतिहास की एक नई और रोमांचक दुनिया की सैर कराएँगे। इसमें आप भारत के उन अनजाने और अद्भुत पहलुओं से परिचित होंगे, जिनके बारे में कम लोग जानते हैं। साथ ही, आप उन वीर नायकों और दूरदर्शी नेताओं की प्रेरक गाथाएँ भी जानेंगे, जिन्होंने हमारे राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।सीखने के लिए तैयार हो जाइए और आनंद लीजिए!

संस्थापक का संदेश

FIHCR की स्थापना एक ऐसे उद्देश्य के साथ की गई है, जिससे भारत अपने इतिहास और अपनी सभ्यता की कहानी को ईमानदारी, गहन अध्ययन और प्रमाणिक दृष्टि से फिर से पहचान सके।

हमारे बच्चों को ऐसी कहानियाँ मिलनी चाहिए जो जीवंत हों—जो उनकी कल्पनाशक्ति को उड़ान दें, साहस का संचार करें, ज्ञान के प्रति जिज्ञासा जगाएँ और उन्हें अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से जोड़ें। जब बाल मन जिज्ञासा, खोज और आश्चर्य के भाव से इतिहास को समझते हैं, तब वे ऐसे भविष्य का निर्माण करते हैं जिसकी नींव आत्मविश्वास, स्पष्ट सोच और अपनी जड़ों से जुड़े होने की भावना पर टिकी होती है।

YUVA इसी भावना का उत्सव है। यह विद्यार्थियों को नए विषयों की खोज करने, निडर होकर प्रश्न पूछने और अपने इतिहास से एक आत्मीय रिश्ता बनाने का अवसर देता है। यह कार्य हमें अपार आनंद देता है, क्योंकि इतिहास कभी ठहरता नहीं—उसमें हमेशा कुछ नया जानने, समझने और खोजने की संभावनाएँ बनी रहती हैं।

सीखने और अपने इतिहास की पुनर्खोज की इस प्रेरणादायी यात्रा में हमारे सहभागी बनने के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद।

डॉ. विक्रम संपत,
संस्थापक एवं निदेशक, FIHCR
लेखक, इतिहासकार, रॉयल हिस्टोरिकल सोसाइटी, (यूनाइटेड किंगडम) के फेलो

नमस्ते, साथी एक्सप्लोरर्स!

मैं हूँ कवि—वह पैनी नज़र वाला कौआ, जो सदियों से आसमान से भारत की कहानी देखता आ रहा हूँ।
और सच बताऊँ तो, इन सारे वर्षों में भारत के आसमान में उड़ते हुए मैंने जिन सबसे बहादुर लोगों को देखा, उनमें महिलाएँ भी शामिल थीं।

रानियाँ, वीरांगनाएँ, क्रांतिकारी और यहाँ तक कि हमारी दादियाँ-नानियाँ भी! जब भी देश ने पुकारा, वे डटकर खड़ी हो गईं।

इस संस्करण में, हम उन असाधारण महिलाओं से मिलने के लिए पूरे भारत में उड़ान भर रहे हैं जिन्होंने ब्रिटिश शासन को चुनौती दी थी। हमारी यात्रा साहस, चतुर रणनीतियों और निडर प्रतिरोध की कहानियों से भरी है। हम युद्ध के मैदानों के ऊपर से उड़ेंगे, पुरानी डायरियों और खतों के पन्ने पलटेंगे, एक लाइव रिपोर्ट सुनेंगे, और मैं खुद एक खास टॉक शो की मेजबानी करूँगा! यात्रा के दौरान तुम्हारे लिए रोचक गतिविधियाँ, पहेलियाँ और मज़ेदार चुनौतियाँ भी होंगी, जिनके माध्यम से तुम अपनी समझ और खोजी प्रतिभा को परख सकोगे।
अंत में, 'शिक्षक कोना' हमें शिवगंगा की सैर कराएगा, जहाँ हम रानी वेलू नचियार और उनकी निडर सेनापति कुयिली की कहानी से जुड़ेंगे। आइए, इस ऐसी गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी के बारे में जानें, जिनका अदम्य साहस अक्सर इतिहास के पन्नों में छिपा रह जाता है।
तो आओ, मेरे साथी खोजियो! अपनी कल्पना के पंख फैलाओ और इस रोमांचक यात्रा पर निकल पड़ो। हमारे सामने अनगिनत कहानियाँ हैं, प्रेरणादायी नायक-नायिकाएँ हैं और इतिहास के ऐसे अनेक रहस्य हैं, जिन्हें हमें मिलकर जानना और समझना है। अपनी नज़रें सजग रखो, जिज्ञासा को हमेशा जीवित रखो और देखते चलो कि इस यात्रा में तुम कितनी नई बातें खोज पाते हो!

- कवि, मुख्य एक्सप्लोरर

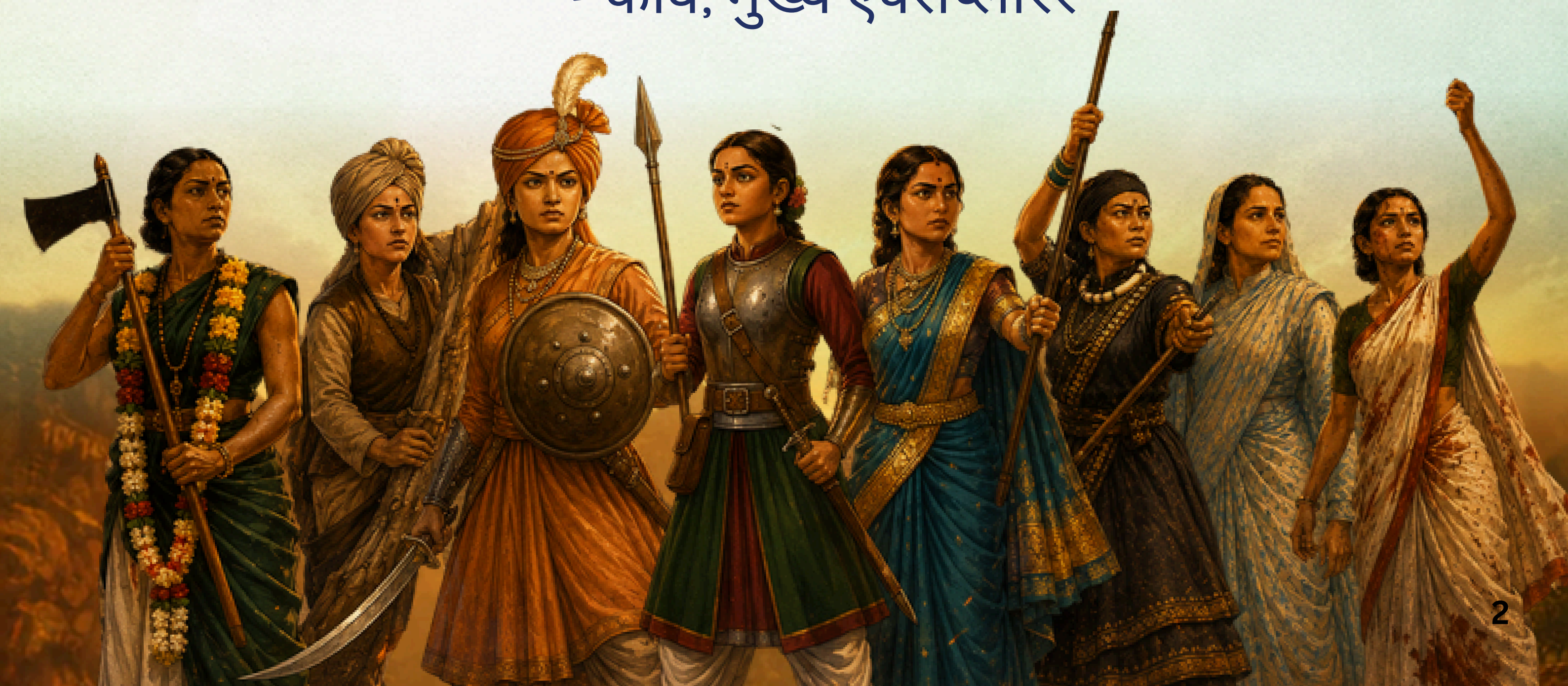

1824 से एक शाही पत्र आया है!

काँव! काँव! साथी एक्सप्लोरर्स, देखिए मुझे क्या मिला!
मैं 1824 में कर्नाटक के कित्तूर के ऊपर से उड़ रहा था, तभी मेरी नज़र एक बहुत ही खास पत्र पर पड़ी। और अंदाज़ा लगाइए इसे किसने लिखा है? स्वयं रानी चेन्नम्मा ने! मैंने इसे सुरक्षित रूप से अपने पंख के नीचे रखा और समय की यात्रा करते हुए इसे सीधे आपके पास ले आया। तो, आप किसका इंतज़ार कर रहे हैं? पत्र खोलें और रानी चेन्नम्मा की कहानी उन्हीं के शब्दों में सुनते!

मेरे बहादुर युवा दोस्तों,

मैं नहीं जानती कि इस खत को आप तक पहुँचने में कितने वर्ष लग जाएंगे। शायद आपके समय का कित्तूर उस कित्तूर से बहुत अलग दिखेगा जिसमें मैं रहती थी।

आप शायद मेरा नाम पहले से ही जानते होंगे। आइए मैं आपको बताती हूँ कि मेरी यात्रा कैसे शुरू हुई।
कित्तूर की रानी बनने से बहुत पहले, मैं काकती गाँव में जन्मी एक साधारण लड़की थी। बचपन में ही मैंने घुड़सवारी करना, तीर चलाना और तलवार चलाना सीख लिया था। तब मुझे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि यही हुनर एक दिन मेरे राज्य की रक्षा करने के काम आएंगे। एक दिन, जब मैं शिकार पर निकली थी, तब राजा मल्लसर्जा ने मेरा साहस देखा। जल्द ही हमारा विवाह हो गया, और मैं कित्तूर की रानी बनी।। एक रानी के रूप में, मैं राज्य के मामलों में पूरी तरह से जुड़ गई। अपने लोगों की समस्याओं को सुना और यह सीखा कि उस भूमि की रक्षा कैसे की जाए जिससे हम सभी प्रेम करते थे। इन अनुभवों ने मुझे आने वाले कठिन वर्षों के लिए तैयार किया।
मेरे पति के निधन के बाद, कित्तूर को बहुत कठिन समय का सामना करना पड़ा था। हमारे राज्य का कोई उत्तराधिकारी नहीं था। इसलिए मैंने शिवलिंगप्पा नाम के एक बालक को गोद लिया, ताकि वह आगे चलकर राज्य की जिम्मेदारी संभाल सके।। लेकिन ब्रिटिश अधिकारियों ने उत्तराधिकारी चुनने के हमारे अधिकार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और कित्तूर पर कब्ज़ा करने की कोशिश की।

यदि कोई आपका घर छीनने की कोशिश करे तो आप क्या करेंगे?
क्या तुम चुप रहते?

मैं नहीं रह सकी।

1824 में, कित्तूर ब्रिटिश सेना के खिलाफ खड़ा हुआ। मेरे वीर सैनिकों और कित्तूर के लोगों ने पूरे साहस के साथ युद्ध लड़ा और हम पहली लड़ाई जीत गए। कुछ समय के लिए हमारा किला दीपों की रोशनी से जगमगा उठा और चारों ओर विजय का उत्सव मनाया गया। लेकिन एक बार फिर, ब्रिटिश एक बहुत बड़ी सेना के साथ लौटे, और कित्तूर के लोगों ने अपने पूरे साहस के साथ युद्ध किया। हालाँकि, इस बार हमारे किले पर कब्ज़ा कर लिया गया। मुझे बंदी बनाकर बैलहोंगल किले में ले जाया गया।

जेल की दीवारें मुझे तो कैद कर सकती थीं, लेकिन वे कित्तूर की भावना को कैद नहीं कर सकीं। अन्य लोगों ने विरोध जारी रखा, और स्वतंत्रता की आशा जीवित रही।

शायद इसीलिए मेरी कहानी आप तक पहुँची है।

हो सकता है कि तुम्हें कभी किसी किले की रक्षा न करनी पड़े।
लेकिन ऐसे क्षण भी आएंगे जब तुम्हें यह तय करना होगा कि
चुप रहना है या जो सही है उसके लिए खड़े होना है।

जब वह क्षण आए, तो मुझे आशा है कि कित्तूर की भावना और
अदम्य साहस तुम्हें कदम उठाने के लिए प्रेरित करेंगे।

साहस के साथ,

कित्तूर रानी चेन्नम्मा

आपकी बारी: कित्तूर के नाम एक खत लिखो!

रानी चेनम्मा का यह खत लगभग 200 साल का सफर तय कर आप तक पहुँचा है। ज़रा सोचिए, अगर आप 1824 के कित्तूर को वापस एक जवाब भेज सकते, तो आप क्या लिखते?

आप उन्हें क्या लिखते?

प्रिय रानी चेन्नम्मा,

आपकी कहानी ने मुझे सिखाया कि________________________।

अगर मैं आपसे मिल पाता, तो मैं पूछता कि ____________________।

मैं ________________________ करके साहस दिखाने का वचन देता/देती हूँ।

भवदीय,

____

अपना नाम लिखें और कवि के साथ अपने शब्दों को समय के पार भेजें!

पंजाब की शेरनी, जिसने अंग्रेज़ों को ललकारा

एक ऐसा राज्य, जिस पर संकट के बादल मंडरा रहे थे। सिंहासन पर बैठे थे एक नन्हे महाराजा, और दूसरी ओर अंग्रेज़ी सेना लगातार आगे बढ़ रही थी। इन सबके बीच खड़ी हैं सिख साम्राज्य की राजमाता, रानी जींद कौर, जो चुप रहने से इनकार कर देती हैं।

आइए, चित्र दर चित्र इस वीरांगना की प्रेरक कहानी को जानें!

महाराजा रणजीत सिंह के निधन के बाद सिख साम्राज्य खतरे में है! रानी जिंद कौर अपने छोटे बेटे, दलीप सिंह की संरक्षिका बनीं। हालाँकि, अंग्रेज़ उन्हें अपने रास्ते का सबसे बड़ा काँटा मानते थे।

As the Iron Lady of Punjab, Rani Jind resisted the British with courage. She mobilised the khalsa army to defend Punjab's freedom.

अंग्रेज़ उनकी कूटनीति और लोगों पर उनके प्रभाव से भयभीत थे। वे उन्हें 'पंजाब की विद्रोही रानी' कहते थे। पंजाब के प्रतिरोध को कुचलने के लिए दृढ़ संकल्पित, अंग्रेज़ों ने 1847 में उन्हें शेखूपुरा किले में बंदी बना लिया।

1849 में, उन्हें वाराणसी के पास कड़ी सुरक्षा वाले चुनार किले में भेज दिया गया, जहाँ वे अप्रैल 1849 तक बंदी रहीं।

एक सेविका के भेष में, वे ब्रिटिश कारावास से बच निकलीं, और यह साबित कर दिया कि न तो जंजीरें और न ही दीवारें उनके साहस को तोड़ सकती हैं। ग्रामीणों ने गुप्त रूप से नेपाल की ओर सैकड़ों मील की यात्रा करने में उनकी मदद की, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के 13 वर्ष निर्वासन में बिताए।

आप राज- संरक्षक हैं!

एक राज-संरक्षक भले ही मुकुट न पहनता हो, लेकिन वह इसके साथ आने वाले उत्तरदायित्व को ज़रूर निभाता है।

आपका राज्य एक कठिन परिस्थिति का सामना कर रहा है, और हर किसी को आपके फैसले की प्रतीक्षा होती है।

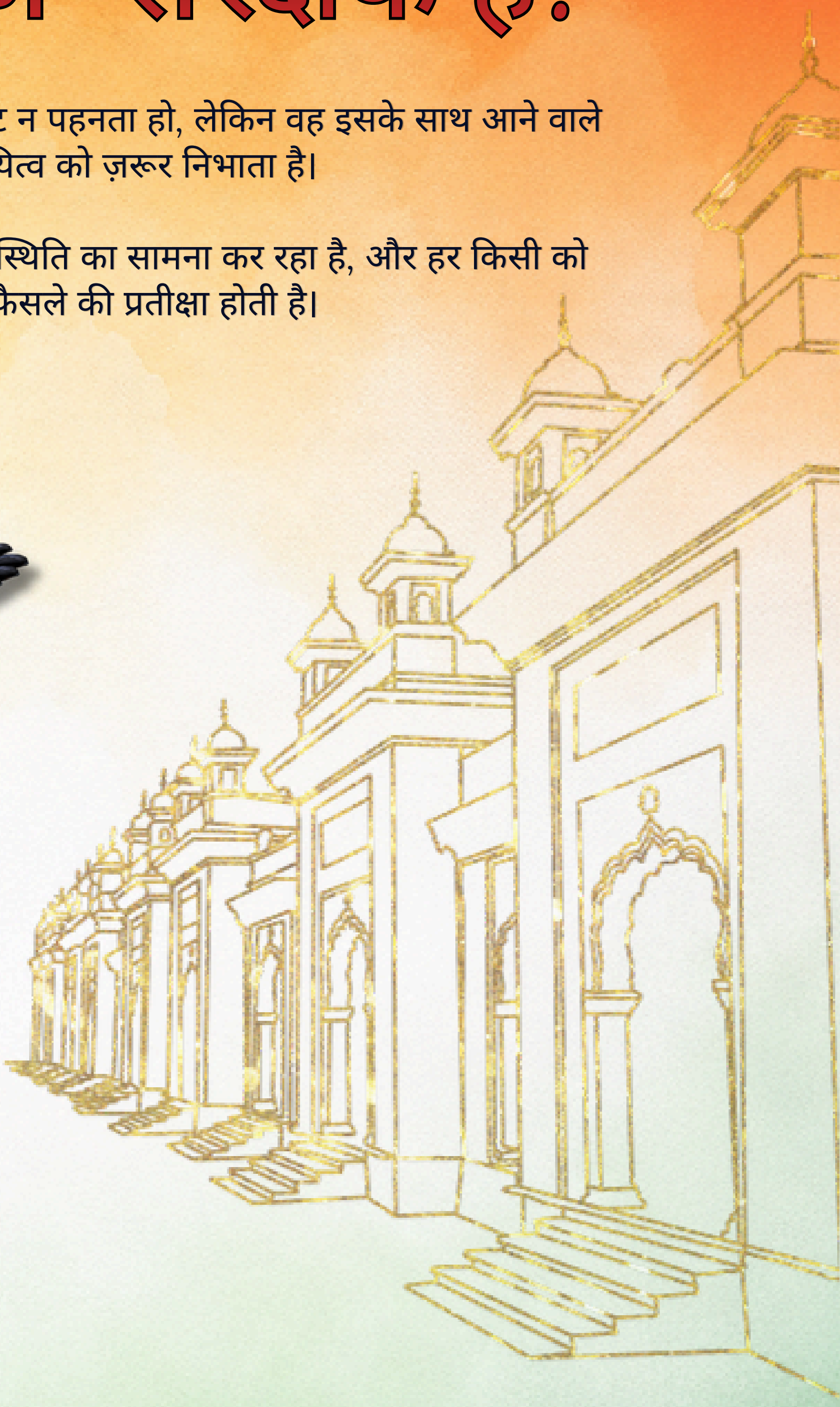

आप क्या चुनेंगे?

1. चुप रहना और टकराव से बचना
2. राज्य को किसी और के हाथों में सौंप दें
3. आगे बढ़ें, नेतृत्व करें और अपने राज्य की रक्षा करें

आपने यह चुनाव क्यों किया?

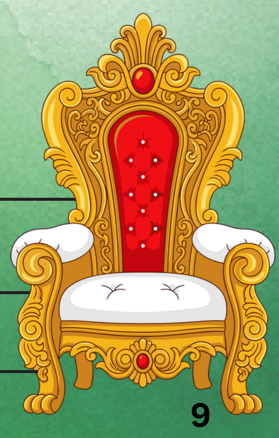

ऊपर देखो! पेड़ पर एक योद्धा है!

साल 1857 है, और मैं लखनऊ के आसमान में उड़ रहा हूँ। हम्म... उत्तर प्रदेश में लखनऊ के सिकंदराबाद का वह विशाल पीपल का पेड़ आराम करने के लिए एकदम सही जगह लग रहा है।

रुको... अरे... नीचे क्या हो रहा है? मुझे गोलियों की आवाज़ सुनाई दे रही है! ब्रिटिश सैनिक भारतीय क्रांतिकारियों पर गोलियाँ बरसा रहे हैं।

ज़रा रुको... क्या उन शाखाओं के बीच अभी कुछ हिला? क्या कोई इस पेड़ पर चढ़ रहा है... हाथ में बंदूक लिए? वह तो किसी सैनिक जैसा दिख रहा है... लेकिन ज़रा ठहरो... क्या वह एक महिला है?!

क्या यह ऊदा देवी पासी हो सकती हैं? वह निडर वीरांगना, जिनकी बहादुरी के चर्चे पूरे लखनऊ में हो रहे हैं?

वाह! देखो, वह कितनी खामोशी से पत्तों के बीच छिप रही हैं, एक पुरुष के भेष में, उनकी बंदूक एकदम स्थिर और तैयार है। वह निशाना लगाती हैं और धायँ! एक अंग्रेज़ सैनिक गिरता है... फिर दूसरा... और फिर एक और! मेरे पंख फड़फड़ा उठे, उन्हें रोकना नामुमकिन है! लगभग 30 सैनिकों को मार गिराया गया है, और उनमें से किसी ने भी इस पेड़ की ओर ऊपर देखने की नहीं सोची। अंग्रेज़ उस रहस्यमयी निशानेबाज़ की तलाश में इधर-उधर भाग रहे हैं। वे हर जगह देखते हैं, लेकिन यहाँ नहीं!

ओह नहीं... उन्होंने आखिरकार उन्हें देख लिया है! वे उन पर गोलियाँ चला रहे हैं! ऊदा देवी को गोली लग गई है!!

अंग्रेज़ जीत की खुशी में उनकी ओर दौड़ते हैं, लेकिन अचानक सदमे में ठिठक जाते हैं। जैसे ही वे उनका हेलमेट हटाते हैं, वे यह देखकर दंग रह जाते हैं कि जिस रहस्यमयी निशानेबाज़ ने उन्हें चकमा दिया, वह कोई पुरुष नहीं, बल्कि साहसी ऊदा देवी थीं।

क्या योद्धा थीं! उन्होंने साबित कर दिया कि साहस की पहचान स्त्री या पुरुष होने से नहीं होती, बल्कि यह तो असंभव परिस्थितियों में भी सही के लिए खड़े होने की ताकत से होती है।

टाइम्स ऑफ कोलोनिएल इंडिया

खेड़ी से लाइव: रामगढ़ की रानी का पलटवार!

मैं कवि हूँ, और मध्य प्रदेश के खेड़ी के युद्ध के मैदान से लाइव रिपोर्टिंग कर रहा हूँ! मैं एक ऊँचे बरगद के पेड़ पर सुरक्षित बैठा हूँ, और यहाँ से क्या अद्भुत नज़ारा दिख रहा है!

बहादुर योद्धाओं की एक टुकड़ी का नेतृत्व रानी अवंतीबाई लोधी कर रही हैं। वह पूरी तरह निडर और दृढ़संकल्प लग रही हैं, जो ईस्ट इंडिया कंपनी की विशाल सेना के सामने चट्टान की तरह डटकर खड़ी हैं।

ज़रा रुको... कुछ अद्भुत हो रहा है!
रानी अपनी सेना के बीच से घोड़े पर सवार होकर गुज़र रही हैं, और सभी को अपनी मातृभूमि के लिए लड़ने का आह्वान कर रही हैं। और अब... युद्ध शुरू हो गया है!
ब्रिटिश सैनिकों को लगा था कि वे आसानी से जीत जाएंगे। वाह! वे कितने गलत हैं!! रानी अवंती बाई की सेना अदम्य साहस और चतुर रणनीति के साथ लड़ रही है। अचानक हमला करके, उन्होंने अंग्रेज़ों को पीछे धकेल दिया है।
ब्रिटिश सेना पीछे हट रही है! हाँ, आपने सही सुना!! खेड़ी का युद्ध रानी और उनके वीर योद्धाओं के लिए एक शानदार जीत बन गया है। चारों ओर विजय का उत्सव मनाया जा रहा है और लोग इस जीत का जश्न मना रहे हैं।

अंग्रेज़ पीछे हट रहे हैं, और खेड़ी जीत की खुशी से गूँज रहा है! क्या युद्ध है और क्या रानी हैं!

युद्धक्षेत्र रैपिड-फायर प्रश्नोत्तरी

क्या आपको लगता है कि आपने कवि की रिपोर्ट को ध्यान से सुना? आइए पता करते हैं!

1. कवि कहाँ से रिपोर्ट कर रहा है?

a. कित्तूर b. खेड़ी c. लखनऊ d. अवध

2. रानी अवंती बाई कितने योद्धाओं का नेतृत्व कर रही हैं?

a, 1,000 b. 2,000 c. 4,000 d. 10,000

3. किस रणनीति ने रानी अवंती बाई की सेना को ब्रिटिश सेना को पीछे धकेलने में मदद की?

a. अचानक हमला b. किले के अंदर छिपना
c. रात में नदी पार करना d. युद्ध के हाथियों का उपयोग करना

प्यारी डायरी, आज मैंने एक ऐसा ध्वज फहराया जो भारत के सपने को अपने साथ समेटे हुए था

क्या आप जानते हैं कि भारत का राष्ट्रीय ध्वज, जिसे आज हम गर्व से लहराते हैं, हमेशा से ऐसा नहीं था? भारत के शुरुआती झंडों में से एक को हमारी साहसी स्वतंत्रता सेनानी मैडम भिकाजी कामा ने 22 अगस्त 1907 को जर्मनी के श्टुटगार्ट में आयोजित द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी कांग्रेस के दौरान फहराया था। सोचो ज़रा, अगर तुम्हें मैडम कामा की डायरी का वो पन्ना पढ़ने को मिले, जिसमें उन्होंने विदेशी ज़मीन पर भारत का झंडा फहराने के उस ऐतिहासिक पल के बारे में लिखा हो!

तारीख: 22 अगस्त 1907

जगह: स्टटगार्ट, जर्मनी

आज का दिन मेरी ज़िंदगी के सबसे यादगार दिनों में से एक रहेगा। अनेक देशों के प्रतिनिधियों के सामने, मुझे अपने प्यारे भारत का झंडा फहराने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस झंडे को अपने हाथों में थामे हुए, मैंने अपने उन लाखों देशवासियों के दर्द और उनके भारी उत्तरदायित्व को महसूस किया जो अभी भी ब्रिटिश शासन के अत्याचारों को सह रहे थे।

आज सुबह, जब मैंने स्टटगार्ट की शांत सड़कों की ओर देखा, तो मेरे ख्यालों में मेरा दूर बसा वतन आ गया। मुझे बॉम्बे की वो भीड़भाड़ वाली सड़कें, वो मेहनती किसान, अपने बच्चों की सलामती की दुआ माँगती वो माँएं और चुपचाप अन्याय सहते वो अनगिनत लोग याद आए। हालाँकि मैं अपने देश से मीलों दूर थी, लेकिन मेरा दिल पूरी तरह से भारत में ही बसता था।

सम्मेलन के लिए निकलने से पहले, मैंने एक बार फिर उस झंडे को देखा। बहुत से लोगों के लिए यह सिर्फ एक कपड़े का टुकड़ा हो सकता था, लेकिन मेरे लिए यह स्वतंत्रता की लालसा रखने वाले करोड़ों लोगों की आशाओं, बलिदानों और सपनों का प्रतीक था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे अपने इस कर्तव्य को पूरी निष्ठा और सम्मान के साथ निभाने का साहस मिले।

सम्मेलन कक्ष जल्द ही विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों से भर गया। मुझे एहसास हुआ कि भले ही बहुत से लोग भारत की महान सभ्यता की तारीफ करते हों, लेकिन अंग्रेज़ी राज में हमारे लोगों की तकलीफों को कुछ ही लोग समझ पाते थे।

जब मैं मंच पर गई, तो मैंने भारत के गौरवशाली अतीत और उसके दर्दनाक वर्तमान के बारे में बात की। फिर मेरे जीवन का सबसे गौरवशाली क्षण आया। पूरी श्रद्धा के साथ, मैंने सभा के समक्ष भारत का ध्वज फहराया और घोषणा की, "यह भारत की स्वतंत्रता का ध्वज है। मैं आप सभी से अपील करती हूँ कि खड़े होकर इसका सम्मान करें।" कुछ पल के लिए हॉल में सन्नाटा छा गया। फिर, एक-एक करके प्रतिनिधि अपनी जगह पर खड़े हो गए, और पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा।

मुझे पता है कि आगे और भी बड़ी कठिनाइयाँ आ सकती हैं, लेकिन मुझे कोई डर नहीं है। भले ही मैं भारत को आज़ाद देखने के लिए ज़िंदा न रहूँ, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाली पीढ़ियाँ इस संघर्ष को जारी रखेंगी। तब तक, मैं अपनी प्यारी मातृभूमि की सेवा में अपनी ज़िंदगी की हर साँस समर्पित कर दूँगी।

स्वतंत्रता सेनानी को उनके प्रतीक से मिलाएँ

हर स्वतंत्रता सेनानी को किसी न किसी खास चीज़ के लिए याद किया जाता है जो वे अपने साथ रखते थे, इस्तेमाल करते थे या जिससे वे जुड़े हुए हैं...

एक तलवार, एक झंडा, एक पेड़ या यहाँ तक कि एक मशाल। दिए गए स्वतंत्रता सेनानियों को उनके संबंधित प्रतीकों से मिलाएँ।

कॉलम A	कॉलम B
रानी चेन्नम्मा	
ऊदा देवी	
भीकाजी कामा	
रानी जींद कौर	

प्रीतिलता वाडेदार

21 साल की क्रांतिकारी जिसने ब्रिटिश सत्ता पर हमले का नेतृत्व किया

1932 में, अंग्रेजों का अभी भी भारत पर नियंत्रण था। चटगाँव (वर्तमान बांग्लादेश) में, प्रीतिलता वाडेकर नामक एक युवा महिला एक ऐसे अभियान की तैयारी कर रही थी जो उसे भारत के स्वतंत्रता संग्राम के सबसे साहसी क्रांतिकारियों में से एक बना देता।

प्रीतिलता का पालन-पोषण एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था और वह एक मेधावी छात्रा थीं। बाद में वह एक स्कूल शिक्षिका बन गईं। हालाँकि, वह ब्रिटिश शासन के तहत भारतीयों द्वारा सहे जा रहे अपमान और अत्याचारों को नजरअंदाज नहीं कर सकीं। अपने देश की स्वतंत्रता के लिए लड़ने का दृढ़ निश्चय करते हुए, वह प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी सूर्य सेन, जिन्हें मास्टर-दा के नाम से जाना जाता था, के नेतृत्व वाले क्रांतिकारी समूह में शामिल हो गईं।

समूह में एक और युवा क्रांतिकारी कल्पना दत्त थीं। उन्होंने सूर्य सेन के साथ मिलकर काम किया और विभिन्न क्रांतिकारी गतिविधियों की योजना बनाने में मदद की। कल्पना को पहाड़तली यूरोपियन क्लब पर होने वाले हमले में भाग लेना था। दुर्भाग्य से, अभियान से पहले ही अंग्रेजों ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और वे इसमें भाग नहीं ले सकीं। इस असफलता के बावजूद, जिन योजनाओं में उन्होंने योगदान दिया था, वे अभियान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थीं।

लक्ष्य चटगाँव के पास स्थित पहाड़तली यूरोपियन क्लब था। यह क्लब एक बोर्ड के कारण ब्रिटिश नस्लीय भेदभाव का प्रतीक बन गया था, जिस पर कथित तौर पर लिखा था, "कुत्तों और भारतीयों का प्रवेश वर्जित है।" कई भारतीयों के लिए, यह क्लब औपनिवेशिक शासन के अंहकार और अन्याय का प्रतिनिधित्व करता था।

23 सितंबर 1932 की रात को, प्रीतिलता ने सशस्त्र क्रांतिकारियों के एक समूह का क्लब की ओर नेतृत्व किया। संदेह से बचने के लिए पुरुषों के कपड़े पहने हुए, उन्होंने कुशलतापूर्वक इस अभियान का निर्देशन किया। जैसे ही यूरोपीय अधिकारी और उनके परिवार अंदर एकत्र हुए, क्रांतिकारियों ने इमारत को घेर लिया और आग्नेयास्त्रों तथा विस्फोटकों का उपयोग करके अपना हमला शुरू कर दिया। गोलियों की आवाज़ गूँजने और खिड़कियों के शीशे टूटने से क्लब में दहशत फैल गई। अंदर मौजूद कई लोग घायल हो गए क्योंकि क्रांतिकारियों ने उस स्थान पर प्रहार किया था जिसे वे ब्रिटिश अत्याचार का प्रतीक मानते थे।

जैसे ही समूह ने पीछे हटना शुरू किया, ब्रिटिश सेना ने जवाबी कार्रवाई की। गोलीबारी के दौरान, प्रीतिलता को गोली लगी और वह गंभीर रूप से घायल हो गईं। वह जानती थीं कि अगर उन्हें पकड़ लिया गया, तो उन्हें भीषण प्रताड़ना और पूछताछ का सामना करना पड़ेगा जिससे उनके साथियों और क्रांतिकारी आंदोलन को खतरा हो सकता है।

ऐसी स्थिति के लिए तैयार रहते हुए, वह अपने साथ साइनाइड की एक शीशी रखती थीं। अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण करने से इनकार करते हुए, प्रीतिलता ने वह ज़हर पी लिया और कुछ ही समय बाद वीरगति को प्राप्त हो गईं। उनकी आयु केवल 21 वर्ष थी।

यद्यपि इस हमले से ब्रिटिश शासन का अंत नहीं हुआ, फिर भी यह प्रतिरोध का एक सशक्त प्रतीक बन गया। प्रीतिलता वाडेदार के साहस ने कई युवा भारतीयों, विशेषकर महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। कल्पना दत्त जैसी क्रांतिकारियों के साथ, उन्होंने यह दिखा दिया कि स्वतंत्रता की लड़ाई आयु या लिंग तक सीमित नहीं थी। आज, उन्हें भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे निडर नायकों में से एक के रूप में याद किया जाता है।

गाइदिनलिउ पामेई उर्फ रानी गाइदिनलिउ

नेता, हेराका आंदोलन (1931-1932)
ज़ेलियांगरोंग समुदाय

- ज़ेलियांगरोंग आंदोलन की शुरुआत करने वाले मेरे मार्गदर्शक हाइपौ जादोनंग की मृत्यु के बाद मात्र 16 वर्ष की आयु में नेतृत्व संभाला।
- स्वदेशी परंपराओं को संरक्षित करने और औपनिवेशिक हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए गाँवों को एकजुट किया।
- लोगों को अपनी संस्कृति और परंपराओं की रक्षा करने के लिए प्रोत्साहित किया।
- कठिन समय में भी दूसरों को साहसी बनने के लिए प्रेरित किया।

स्वतंत्रता सेनानी (1931 - 1932)
भारतीय उपनिवेश-विरोधी प्रतिरोध

- ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ प्रतिरोध का नेतृत्व किया।
- दबाव में रहकर समस्याओं का समाधान किया।
- गिरफ्तार होने के बाद भी कभी हार नहीं मानी।
- 14 वर्ष जेल में बिताए लेकिन अपने लोगों की मदद करने के लिए प्रतिबद्ध रहीं।

राजनीतिक बंदी (1932- 1947)
ब्रिटिश भारत

- लगभग 15 वर्षों तक कारावास में रहीं।
- अपने उद्देश्य के प्रति दृढ़ता और प्रतिबद्धता के माध्यम से प्रतिरोध को प्रेरित करना जारी रखा।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद एक सम्मानित राष्ट्रीय हस्ती के रूप में उभरीं।

सामुदायिक नेता और सांस्कृतिक पैरोकार (1947-1993)
स्वतंत्र भारत

- जनजातीय समुदायों के कल्याण और विकास के लिए काम किया।
- स्वदेशी रीति-रिवाजों और परंपराओं के संरक्षण को बढ़ावा दिया।
- शिक्षा, शांति और सामाजिक सद्भाव को प्रोत्साहित किया।
- हेराका आस्था और ज़ेलियांगरोंग की सांस्कृतिक पहचान की वकालत करना जारी रखा।

**नमस्ते! मैं रानी गाइदिनलिउ हूँ।
अगर जीवन एक वीडियो गेम होता, तो मेरे लिए सबसे कठिन चुनौती लेवल 16 पर अनलॉक होती।**

अभियान क्या था? अपने लोगों की रक्षा करना, अपनी परंपराओं को सहेजना और दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्यों में से एक का डटकर सामना करना। इसमें कोई चीट कोड, कोई पॉज़ बटन और कोई एक्स्ट्रा लाइफ नहीं थी— केवल साहस, तुरंत निर्णय लेने की क्षमता और टीम वर्क था।

हर चुनौती ने मुझे सिखाया कि महान नेता बड़े होने का इंतज़ार नहीं करते। जब दूसरों को उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत होती है, तब वे आगे आते हैं।

मेरी पाठशाला

खुला आसमान, लोंगकाओ गाँव, मणिपुर

वहाँ कोई क्लासरूम, होमवर्क या रिपोर्ट कार्ड नहीं थे। मेरे बड़े-बुज़ुर्ग, मेरा समुदाय, जंगल और जिस दुनिया में मैंने जन्म लिया था, उसकी चुनौतियाँ ही मेरे शिक्षक थे। मैंने हर दिन दूसरों को सुनकर, देखकर, अभ्यास करके और उनकी मदद करके ही सब कुछ सीखा।

सम्मान और पुरस्कार

ताम्र पत्र (1972)
पद्म भूषण (1982)
विवेकानंद सेवा पुरस्कार (1983)
स्त्री शक्ति पुरस्कार (1991)
भगवान बिरसा मुंडा पुरस्कार (1996, मरणोपरांत)

"क्या आप पता लगा सकते हैं कि रानी गाइदिनलिउ को मिले पुरस्कार किसने प्रदान किए थे?"

कौशल का समर्थन करें

आपने रानी गाइदिनलिउ का परिचय देखा है। आप उनके किस कौशल का समर्थन करेंगे?

- नेतृत्व
- साहस
- दृढ़ता
- समुदाय

इनमें से किसी एक को चुनें और उनकी कहानी से एक ऐसा उदाहरण लिखें जो आपके उत्तर की पुष्टि करता हो।

मैंने_________________ को चुना क्योंकि

____

____.

टॉक शो: ब्रिटिश राज के खिलाफ विद्रोह

एपिसोड: कमाल करने वाली दादी
होस्ट: कवि
अतिथि: मातंगिनी हाजरा

(पश्चिम बंगाल के तामलुक की एक साहसी, 73 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी)

कवि: क्या हाल हैं, दोस्तों? "ब्रिटिश राज के खिलाफ विद्रोह" में आपका स्वागत है। आज, हम सीधे औपनिवेशिक बंगाल से प्रसारण कर रहे हैं, और हमारी आज की अतिथि एक ऐसी हस्ती हैं जिन्होंने यह साबित कर दिया कि साहस की कोई उम्र नहीं होती। कृपया स्वागत करें महान... मातंगिनी हाजरा का!

मातंगिनी: नमस्कार, कवि। स्वतंत्र भारत के लोगों को देखकर बहुत अच्छा लग रहा है।

कवि: नमस्ते मातंगिनी जी! या मुझे आपको गांधी बूढ़ी कहना चाहिए? आपका यह शानदार नाम कहाँ से आया?

मातंगिनी: आप मुझे गांधी बूढ़ी कह सकते हैं! मेरे गाँव के लोगों ने मुझे यह नाम इसलिए दिया था क्योंकि मैं महात्मा गांधी के बताए मार्ग पर चलती थी। जब उन्होंने असहयोग आंदोलन का आह्वान किया, तो मैंने चरखे पर अपनी खुद की खादी कातकर उसमें भाग लिया था।

"क्या आप पता लगा सकते हैं कि बंगाली में बूढ़ी का क्या मतलब होता है?"

कवि: ओह, समझ गया! 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान आपकी आयु 73 वर्ष थी। उस उम्र में ज़्यादातर लोग बस शांति से अपना जीवन बिताना चाहते हैं। आखिर किस बात ने आपको स्थानीय पुलिस स्टेशन पर कब्ज़ा करने के लिए 6,000 लोगों के एक विशाल विरोध मार्च का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित किया?

मातंगिनी: कवि, जब आपके पास स्वतंत्रता नहीं होती, तो आप खुद को बूढ़ा महसूस नहीं करते। बल्कि, आपको क्रोध आता है। ब्रिटिश सरकार ने हमारा शोषण करके हमारे मनोबल को पूरी तरह से कुचल दिया था। 29 सितंबर 1942 को, हम अपने शहर को वापस लेने के लिए आगे बढ़े। भीड़ बहुत बड़ी थी, जिसमें ज़्यादातर महिलाएँ और युवा छात्र शामिल थे।

कवि: लेकिन पुलिस के पास तो हथियार थे, है ना? क्या आप भागना नहीं चाहती थीं?

मातंगिनी: कभी नहीं। भीड़ हिचकिचाई, और मैं जानती थी कि उन्हें मेरी ज़रूरत है। किसी को तो हिम्मत दिखानी ही थी। मैं आगे बढ़ी, भारत का तिरंगा झंडा अपने सिर से ऊँचा उठाया, और आगे बढ़ती रही।

कवि: और फिर आगे क्या हुआ?

मातंगिनी: आपको क्या लगता है? पुलिस ने गोलियां चला दीं। एक गोली सीधे मेरे दाहिने हाथ पर लगी। मेरा हाथ सुन्न पड़ गया, इसलिए मैंने झंडे को अपने बाएँ हाथ में ले लिया और "वंदे मातरम!" का नारा लगाते हुए आगे बढ़ती रही।

कवि: गोली लगने के बाद भी?

मातंगिनी: उन्होंने मुझे दूसरी गोली मारी, बाएँ हाथ में। फिर भी मैंने उसे गिरने नहीं दिया। मैंने सोचा: "अगर यह झंडा ज़मीन पर गिर गया, तो इसका मतलब होगा कि अंग्रेज़ जीत गए।" मेरे अंदर जितनी भी ताकत बची थी, मैंने झंडे को अपने सीने से कसकर पकड़ लिया। तीसरी गोली मेरे माथे पर लगी। जैसे ही मैं ज़मीन पर गिरी, तो मेरी आखिरी साँस में बस यही दो शब्द थे: वंदे मातरम। लेकिन वह तिरंगा अंत तक शान से ऊपर ही रहा।

कवि: आपके साहस और बलिदान के लिए आपको हमेशा याद रखा जाएगा। जय हिंद। वंदे मातरम।

गोहपुर की बहादुर बेटी

कनकलता बरुआ असम की एक 17 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी थीं।

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, उन्होंने गोहपुर पुलिस स्टेशन की ओर भारत का तिरंगा झंडा लेकर एक जुलूस का नेतृत्व किया। जब ब्रिटिश पुलिस ने गोलियां चलाईं, तो वह तिरंगे को शान से थामे हुए वीरगति को प्राप्त हो गईं, और साहस व देशभक्ति का प्रतीक बन गईं।

कनकलता सुबह-सुबह उठ गई,
अपने बाल बांधे और दौड़ पड़ी।
हँसने या खेलने के लिए नहीं,
बल्कि अंग्रेज़ों को दूर भगाने के लिए!

उसने तिरंगे को चमकते हुए थाम रखा था,
रोशनी से भरे इंद्रधनुष की तरह।
लोग आगे बढ़े, और ढोल ज़ोर से बज रहे थे,
पूरे गोहपुर में आवाज़ें गूंज रही थीं।

"करो या मरो!" वीर पुकार रहे थे,
और नन्ही कनकलता गर्व से चल रही थी।

सैनिकों ने चेतावनी दी, "वापस जाओ! हिम्मत मत करो!"
लेकिन हवा में आज़ादी नाच रही थी।
उसने मुस्कुराकर कहा, "यह झंडा फहराएगा,
भले ही आज मेरी जान चली जाए।"
फिर एक गोली चली, ज़ोर से और तेज़ी से।
लेकिन कनकलता अंत तक डटी रही।
वह गिर गई लेकिन फिर भी झंडे को ऊँचा थामे रखा,
आसमान में बादलों को छूते हुए।
और आज भी, हवाएँ यही कहती हैं:
"बहादुर कनकलता रास्ता दिखा रही है।"

अतीत के सुराग

इस खेल में, आपको एक स्वतंत्रता सेनानी के बारे में तीन सुराग मिलेंगे। आपको इन सुरागों को ध्यान से पढ़ना है और पता लगाना है कि वह कौन हैं।

पहेली 1

मैं एक शिक्षिका थी, युवा और होनहार,
21 वर्ष की आयु में, मैंने चुनी क्रांति की धार।
एक अँधेरी रात में, मैंने किया एक अभियान का नेतृत्व,
उस क्लब के खिलाफ, जिसने छीना था हमारा अधिकार।
बताओ, मैं कौन हूँ?

पहेली 2

जंगल की पहाड़ियों से, मैं पूरे गर्व के साथ उठी,
साम्राज्य के खिलाफ, मैं कभी नहीं झुकी।
भले ही आयु कम थी, पर मेरी आत्मा थी आज़ाद,
बिना राज-पाट के भी, सबने मुझे "रानी" की दी सौगात।
बताओ, मैं कौन हूँ?

पहेली 3

एक रानी, पर मैं केवल सिंहासन पर नहीं बैठी,
मैं गाँव-गाँव घूमी, और कभी अकेली नहीं चली,
मैंने अपने लोगों को उनके हक़ की लड़ाई के लिए एकजुट किया।
बताओ, मैं कौन हूँ?

पहेली 4

मुझे सब दादी कहते थे, सादे सफेद कपड़ों में रहती थी,
जब दाएँ हाथ में गोली लगी, तो मैंने झंडा बाएँ हाथ में ले लिया,
जैसे ही मैं ज़मीन पर गिरी, तब भी तिरंगे को शान से ऊपर ही रखा।
बताओ, मैं कौन हूँ?

मानचित्र गतिविधि
स्वतंत्रता संग्राम को चित्रित करें

पूरे भारत में, वीर महिलाओं ने आवाज़ उठाई, निडरता से लड़ाई लड़ी और एक पूरे राष्ट्र को प्रेरित किया।

प्रत्येक राज्य में लड़ने वाली स्वतंत्रता सेनानी का नाम लिखिए।

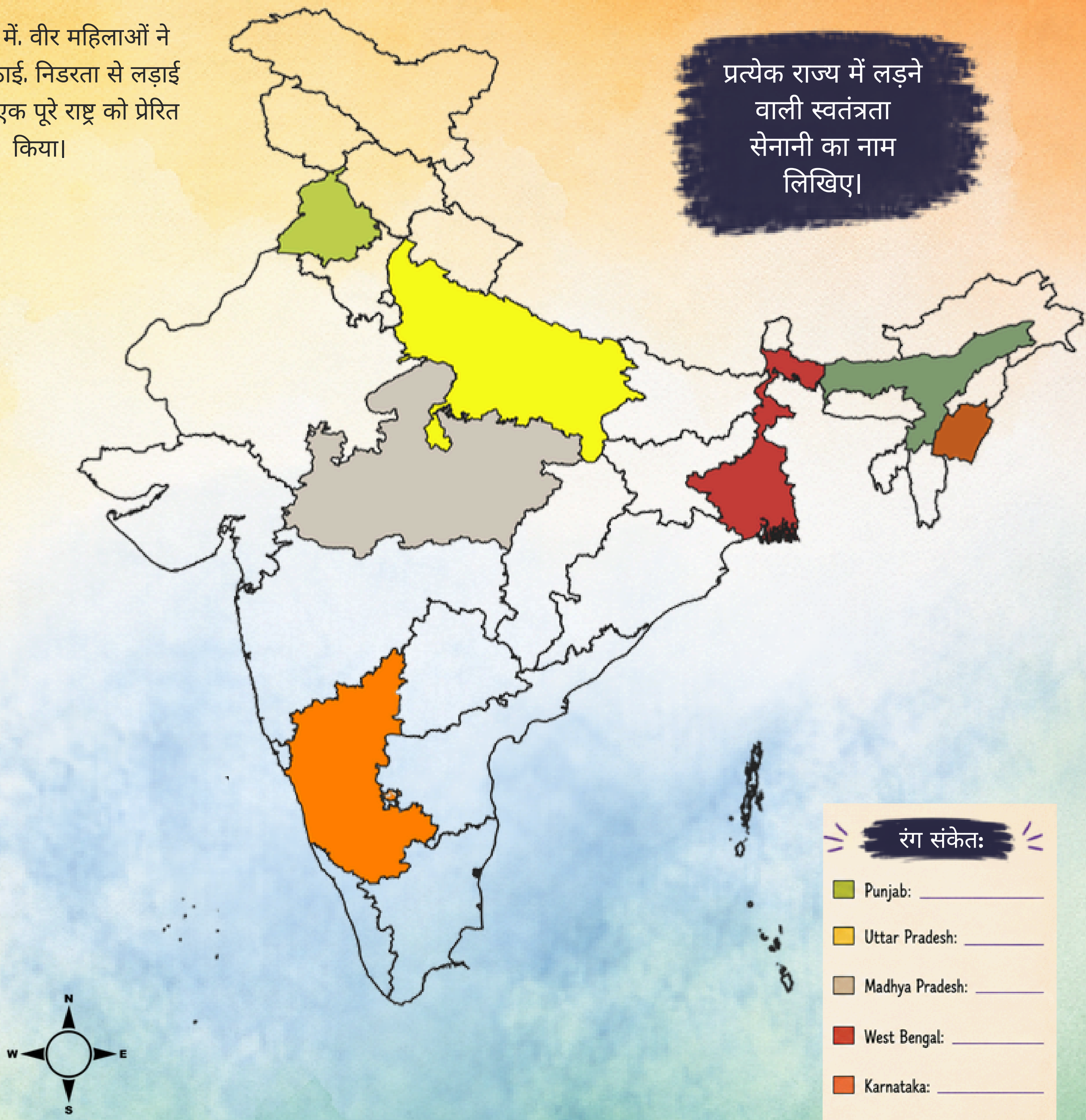

रंग संकेत:

- Punjab: ____________
- Uttar Pradesh: ____________
- Madhya Pradesh: ____________
- West Bengal: ____________
- Karnataka: ____________
- Manipur: ____________
- Assam: ____________

सुराग

रानी चेनम्मा | रानी जींद कौर | ऊदा देवी | रानी अवंती बाई लोधी | मातंगिनी हाजरा | रानी गाइदिनलिउ | कनकलता बरुआ

इतिहास शिक्षण

पाठ्यपुस्तकों से परे इतिहास

जब बच्चों को अंग्रेज़ों के शासन के खिलाफ़ हुए संघर्ष के बारे में पढ़ाया जाता है, तो वे अक्सर प्रसिद्ध नेताओं और बड़ी लड़ाइयों के बारे में ही जानते हैं। लेकिन इतिहास केवल एक व्यक्ति के प्रयासों से नहीं बनता। हर बड़े और प्रसिद्ध नेता के पीछे ऐसे कई लोगों का योगदान होता है, जिनकी मेहनत और साहस भी बहुत महत्वपूर्ण था। भले ही आज उनके नाम उतने प्रसिद्ध न हों, फिर भी देश की आज़ादी की लड़ाई में उनकी भूमिका कभी नहीं भुलाई जा सकती।

अठारहवीं शताब्दी के तमिलनाडु से एक दिलचस्प कहानी मिलती है। शिवगंगा की रानी, वेलु नचियार ने अपना राज्य तब खो दिया जब उस पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ काम करने वाली ताकतों ने कब्जा कर लिया। हार मानने के बजाय, उन्होंने अपनी ज़मीन को वापस जीतने के लिए कई साल गठबंधन बनाने और तैयारी करने में बिताए। संघर्ष के इन तमाम सालों के दौरान, उनकी सबसे करीबी समर्थकों में से एक थीं कुयिली, जो अपनी बहादुरी और वफादारी के लिए जानी जाने वाली एक भरोसेमंद कमांडर थीं।

व्यापक रूप से प्रचलित कथाओं के अनुसार, कुयिली ने एक साहसी अभियान को अंजाम दिया जिसने ब्रिटिश गोला-बारूद के डिपो को नष्ट कर दिया, जिससे दुश्मन की ताकत कमज़ोर हो गई और वेलु नचियार की सेना को एक अहम बढ़त हासिल करने में मदद मिली। कुयिली जैसे वफ़ादार समर्थकों के प्रयासों बदौलत, वेलु नचियार ने अंततः अपना राज्य वापस पा लिया और ईस्ट इंडिया कंपनी को सफलतापूर्वक चुनौती देने वाली शुरुआती भारतीय शासकों में से एक बन गईं।

ऐसी कहानियाँ हमें लगातार यह याद दिलाती हैं कि इतिहास केवल राजाओं, रानियों, लड़ाइयों और तारीखों के बारे में नहीं है। यह उन अनगिनत लोगों के बारे में भी है जिनकी बहादुरी, कड़ी मेहनत और बलिदान अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं।

विद्यार्थियों को इस विचार को अपने जीवन से जोड़ने में मदद करने के लिए, कक्षा में 'हिडन हीरो प्रोजेक्ट' आज़माएँ। अपने विद्यार्थियों से अपने स्कूल, पड़ोस या परिवार में किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचने के लिए कहें जिसका काम दूसरों की मदद करता है लेकिन अक्सर किसी का ध्यान उस पर नहीं जाता। वह कोई दादा-दादी या नाना-नानी, सफ़ाई कर्मचारी, माली, चौकीदार, रसोइया, एक बस ड्राइवर, लाइब्रेरियन, केयरटेकर या कोई भी ऐसा व्यक्ति जिसका योगदान उनके जीवन में बदलाव लाता है।

वे संक्षेप में यह बता सकते हैं:

- यह व्यक्ति कौन है?
- वे दूसरों की मदद कैसे करते हैं?
- उनका योगदान क्यों महत्वपूर्ण है?

पूरी कक्षा को एक व्यापक प्रश्न पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित करें: इतिहास के कितने महत्वपूर्ण लोगों को केवल इसलिए भुला दिया गया होगा क्योंकि उनकी कहानियाँ कभी दर्ज ही नहीं हुईं?

कुयिली की कहानी को उनके आस-पास के छुपे हुए नायकों से जोड़कर, विद्यार्थी यह समझ सकते हैं कि इतिहास केवल प्रसिद्ध हस्तियों द्वारा ही नहीं गढ़ा जाता, बल्कि उन अनेक व्यक्तियों द्वारा भी गढ़ा जाता है जिनके प्रयास अक्सर अनसुने रह जाते हैं लेकिन हमारे आस-पास की दुनिया पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं।

पुस्तक समीक्षा

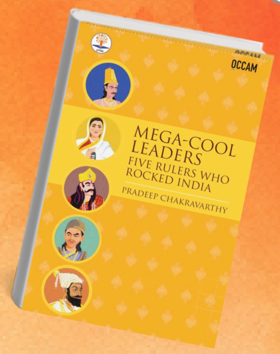

मेगा कूल लीडर्स (प्रदीप चक्रवर्ती द्वारा)

रूपा बालिगा, हाउस फुल ऑफ बुक्स द्वारा

"Mega Cool Leaders: Five Rulers Who Rocked India", लेखक प्रदीप चक्रवर्ती द्वारा रचित और मेघा विश्वनाथ द्वारा चित्रित। ब्लूवन इंकद्वारा फाउंडेशन फॉर इंडियन हिस्टोरिकल एंड कल्चरल रिसर्च युवा के सहयोग से प्रकाशित। यह एक बेहद ज्ञानवर्धक पुस्तक है जो भारत के समृद्ध अतीत के पाँच प्रेरणादायक व्यक्तियों के बारे में बताती है और यह दर्शाती है कि उन्होंने अपने असाधारण योगदान से इसे आकार देने में किस प्रकार मदद की।

इस आकर्षक संग्रह में भारत के विभिन्न हिस्सों के पाँच दूरदर्शी नेताओं की कहानियाँ हैं। यह समय के पार एक यात्रा कराता है और उन नेताओं के अविश्वसनीय जीवन से पर्दा उठाता है जिन्होंने भारत के इतिहास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कश्मीर को अभूतपूर्व गौरव दिलाते हुए और उसे मानचित्र पर अंकित करते हुए एक एकजुट एवं समृद्ध भारत का सपना देखने वाले ललितादित्य मुक्तापिड से लेकर, कृष्णदेवराय तक, जिनके शासनकाल ने विजयनगर को दक्षिण भारत में एक मजबूत सांस्कृतिक और राजनीतिक महाशक्ति बनाया तथा एक स्थायी विरासत छोड़ी। मुगलों से असम की रक्षा करने वाले लाचित बोरफुकन, जिनकी गाथाएँ किंवदंतियाँ बन चुकी हैं, से लेकर छत्रपती शिवाजी तक, जिनके क्रांतिकारी मार्ग ने हिंदुवी स्वराज्य की स्थापना की। अहिल्याबाई होल्कर, जिनके करुणामयी नेतृत्व ने इंदौर को एक समृद्ध राज्य में बदल दिया।

SCAN ME

यह पुस्तक न केवल यह बताती है कि इन शासकों ने अपनी सैन्य जीतों के माध्यम से इतिहास में कैसे अपनी छाप छोड़ी, बल्कि यह उनके ज्ञान, संघर्षों और समर्पण को भी उजागर करती है। उनकी विरासतें पीढ़ियों को प्रेरित करती रहती हैं और दृढ़ता, साहस और दूरदर्शी नेतृत्व जैसे विभिन्न गुणों में कालातीत सबक प्रदान करती हैं। इस रोचक कहानी में बच्चों और माता-पिता दोनों के लिए इंटरैक्टिव गतिविधियाँ और क्विज़ शामिल हैं। समय की यात्रा पर निकलने और भारत के विभिन्न हिस्सों के इन अद्भुत शासकों की कहानियों को जानने के लिए इस रोचक पुस्तक को पढ़ें।

यह पुस्तक युवा पाठकों को अति-शानदार नेताओं से परिचित कराने और उनके बारे में चर्चा करने का एक बेहतरीन तरीका है। इसे एक आकर्षक शैली में प्रस्तुत किया गया है, जिसमें कुछ नेताओं और उनके भरोसेमंद साथियों जैसे कृष्णदेवराय और तेनाली राम, या अहिल्याबाई होल्कर और तुकोजी राव के बीच के संवाद भी शामिल हैं,
यह किताब मेरे और मेरे ग्यारह साल के बेटे के लिए काफी रोचक और दिलचस्प साबित हुई। हालाँकि शिवाजी और कृष्णदेवराय जैसे कुछ शासक काफी नामचीन हैं, लेकिन अन्य की यादें या तो भुला दी गई हैं या केवल उन क्षेत्रों तक सीमित रह गई हैं जहाँ उन्होंने राज किया था। उन्हें उनका उचित सम्मान मिलते हुए देखना बहुत सुखद लगता है। इसमें दी गई गतिविधियाँ काफी रचनात्मक और रोचक हैं। यह किताब पाठकों को यह अनुभव कराने और सोचने पर मजबूर करती है कि जिनके बारे में वे पढ़ रहे हैं, उनके जैसा शासक बनने के लिए क्या करना पड़ता है। इन कहानियों को लिखने के लिए इस्तेमाल किए गए स्रोतों का उल्लेख हर कहानी के अंत में किया गया है, साथ ही उन किताबों के नाम भी दिए गए हैं जिन्हें और अधिक जानने के लिए पढ़ा जा सकता है। इन शासकों ने निश्चित रूप से इतिहास की दिशा बदल दी और अपने पीछे एक कभी न मिटने वाली विरासत छोड़ी। उनके कुछ ऐतिहासिक स्मारक आज भी मौजूद हैं और उनकी महिमा को दर्शाते हैं। कुल मिलाकर, भारतीय इतिहास के बारे में और अधिक जानने के इच्छुक हर व्यक्ति के लिए यह एक बेहतरीन किताब है।

अनुशंसित आयु: यह किताब *10* वर्ष और उससे अधिक आयु के किसी भी व्यक्ति के लिए उपयुक्त है।

YUVA की सिफारिशें

हमारे अतीत को आकार देने वाली कहानियाँ

मेगा-कूल लीडर्स: फाइव लीडर्स हू रॉक्ड इंडिया

डॉ. प्रदीप चक्रवर्ती

अहिल्याबाई होल्कर, कृष्णदेवराय, लचित बोरफुकन, छत्रपति शिवाजी महाराज और ललितादित्य मुक्तापीड़—इन पाँच असाधारण भारतीय शासकों के नेतृत्व, साहस और दूरदर्शिता के बारे में जानें।

द फैसिनेटिंग महाराजाज़ ऑफ़ इंडिया

श्रीलता मेनन

भारत भर की रियासतों के 25 उल्लेखनीय शासकों के बारे में जानें जिन्होंने शिक्षा, वास्तुकला और सांस्कृतिक विरासत में योगदान दिया। यह पुस्तक भारत के शाही अतीत और इसे आकार देने वाले राजघरानों की विरासतों की एक झलक प्रस्तुत करती है।

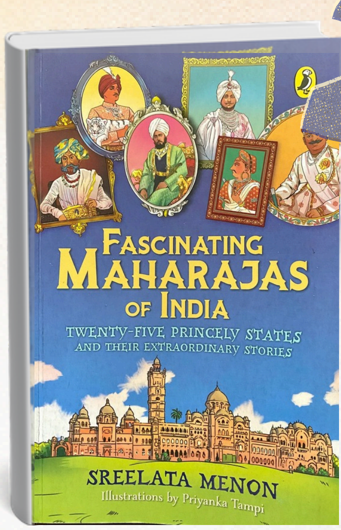

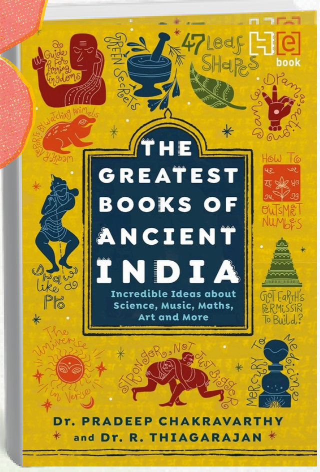

द ग्रेटेस्ट बुक्स ऑफ एंशिएंट इंडिया

डॉ. प्रदीप चक्रवर्ती

प्राचीन भारत की उन चौदह पुस्तकों के बारे में जानें जिन्होंने विज्ञान, गणित, चिकित्सा, वास्तुकला और कला के क्षेत्र में क्रांति ला दी।

द ब्लू हॉर्स एंड अदर अमेजिंग एनिमल्स फ्रॉम इंडियन हिस्ट्री

नंदिनी सेनगुप्ता

उन अद्भुत जानवरों की कहानियाँ जानें जिन्होंने भारत के इतिहास और किंवदंतियों पर एक अमिट छाप छोड़ी। यह पुस्तक अपने असाधारण गवाहों की नज़र से देखे गए अतीत की यात्रा प्रस्तुत करती है।

उत्तर

Battlefield Rapid-Fire Quiz

युद्धभूमि रैपिड-फायर क्विज़

1. b- खीरी
2. c- 4000
3. a- अचानक हमला

स्वतंत्रता सेनानी का उनके प्रतीक से मिलान करें

1. रानी चेनम्मा- तलवार
2. ऊदा देवी- पीपल का पेड़
3. भीकाजी कामा- भारत की स्वतंत्रता का ध्वज
4. रानी जींद कौर- सिख साम्राज्य का ध्वज

अतीत के सुराग

पहेली 1- प्रीतिलता वाडेदार
पहेली 2- रानी गाइदिनलिउ
पहेली 3- रानी अवंती बाई लोधी
पहेली 4- कनकलता बरुआ

स्वतंत्रता संग्राम का मानचित्र

पंजाब: रानी जींद कौर
उत्तर प्रदेश: ऊदा देवी
मध्य प्रदेश: रानी अवंती बाई लोधी
पश्चिम बंगाल: मातंगिनी हाजरा
कर्नाटक: रानी चेनम्मा
मणिपुर: रानी गाइदिनलिउ
असम: कनकलता बरुआ

हमारे योगदानकर्ताओं का

विशेष उल्लेख:

आर्या प्रसीद, वामिका चौरसिया, हिमानी सेजवाल, हेमा धुलिपुड़ी, मोक्षदा गुप्ता, पल्लव बैराग्य, सौजेन्द्र कुमार पात्रा, सुहानी मुदगल

आभार

भाविश अग्रवाल, संस्थापक एवं अध्यक्ष
– ओला फाउंडेशन

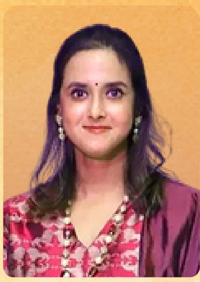

राजलक्ष्मी अग्रवाल, चेयरपर्सन
- ओला फाउंडेशन

देवेश वर्मा, प्रमुख
- ओला फाउंडेशन

हम भावश अग्रवाल, राजलक्ष्मी अग्रवाल, देवेश वमाऔर ओला फाउंडेशन के आभारी है, जनके उदार सहयोग से हमें कई प्रमुख पहल को आकार देनेमसहायता मलती है।

YUVA आउटरीच पार्टनर्स

हमारी कम्युनिटी से जुड़ें

हमें फॉलो करें